International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 11-07-2024, Accepted: 10-08-2024, Published: 26-08-2024
Volume 10, Issue 3, 2024, Page No. 39-40

'गिलिगडु' उपन्यास में चित्रित वृद्ध विमर्श

श्री महेश बापुराव चव्हाण
सहायक प्राध्यापक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष, काकासाहेब चव्हाण कॉलेज, तलमावले, तहसिल–पाटण जिला–सातारा, महाराष्ट्र, भारत

सारांश
आधुनिक युग साहित्य की दृष्टि से काफी संपन्न रहा है। इस युग में साहित्य के क्षेत्र में काफी बदलाव देखे गये हैं। जैसे परिवर्तन प्रकृति का नियम है वैसे हि कालानुरूप परिवर्तन साहित्य का नियम बन गया है। जब जब काल परिवर्तन होता रहा तब तब साहित्य भी परिवर्तीत होता रहा है। केवल मनोरंजन अथवा राजा महाराजाओं की प्रशंसा करना यह उद्देश्य रखनेवाला साहित्य प्राचीन मध्ययुगीन काल से आधुनिक काल तक आते–आते साहित्य मनुष्य जीवन का अविभाज्य अंग बन गया। साहित्य में मनुष्य के जीवन से जुड़े हुए विभिन्न पहलू को देखा जाने लगा और साहित्य का उद्देश्य समाज में व्याप्त सभी प्रकार के पहलुओं को उजागर करना बन गया। इसमें मनुष्य जीवन की पीड़ा, संत्रास, कुंठा आदि को व्यक्त किया गया है। साहित्य का सीधा संबंध मनुष्य जीवन से है इसी अर्थ में साहित्य मनुष्य के जीवन का दर्पण कहलाता है। मनुष्य का समग्र जीवन चित्रण साहित्य का उद्देश्य है।

मूल शब्दः वृद्ध, विमर्श, बुजुर्ग, अकेलापन, उपेक्षित, नई पीढ़ी, पुरानी पीढ़ी

आधुनिक युग में साहित्य में विभिन्न विमर्श प्रस्तुत हो रहे हैं– जैसे दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, स्त्री विमर्श, बाल विमर्श, किसान विमर्श, किन्नर विमर्श इसी तरह वृद्ध विमर्श भी एक नए विमर्श के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत हुआ है। मनुष्य के जीवन में कुछ महत्वपूर्ण चरण होते हैं– जैसे शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था और अंतिम महत्वपूर्ण चरण के रूप में वृद्धावस्था। वृद्धावस्था मनुष्य के जीवन का अंतिम पड़ाव है जिसमें मनुष्य का जीवन अत्यंत दयनीय और सोचनीय बन जाता है। ऐसी अवस्था में मनुष्य को अनुपयोगी वस्तु के रूप में देखा जाता है। साहित्य के प्रति रुचि रखनेवाले रचनाकारों ने बडी ही संवेदनशीलता के साथ मनुष्य जीवन की अंतिम अवस्था वृद्धावस्था का चित्रण भिन्न भिन्न रचनाओं में किया है और वही आज हमारे सम्मुख वृद्ध विमर्श का रूप धारण कर साहित्य को समृद्ध बना रहा है।

'गिलिगडु' उपन्यास में चित्रित वृद्ध विमर्श

अंग्रेजी भाषा के 'डिस्कोर्स' शब्द का हिंदी प्रतिरूप है–विमर्श। पाश्चात्य विद्वान क्रिस बार्कर ने विमर्श की परिभाषा देते हुए कहा है कि, "विमर्श ज्ञान की वस्तुओं की बोधगम में तरीके से परिकल्पना है, संरचना करते हैं, निर्माण करते हैं, साथ तर्क के अन्य तरीको को अबोधगमय बनाते हैं।" [1]

वृद्ध शब्द का शाब्दिक अर्थ है– पका हुआ, परिपक्व। अंग्रेजी हिंदी शब्दकोश के अनुसार अंग्रेजी के Old शब्द का हिंदी पर्याय वृद्ध माना गया है। Old का अर्थ है बुढा, वृद्ध, पुराना आदि।

विभिन्न शब्दकोशो में वृद्ध शब्द का अर्थ निम्न प्रकार से दिया गया है।

संस्कृत मराठी शब्दकोश के अनुसार

'वृद्ध' शब्द का अर्थ होता है म्हातारा, वृद्धिंगत, पंडित। [2]

बृहत हिंदी कोश के अनुसार

वृद्ध शब्द का अर्थ है– बढ़ा हुआ, बड़ा, चतुर विद्वान, बूढ़ा आदमी, सम्मानित व्यक्ति, ऋषि आदि। [3]

राजपाल हिंदी शब्दकोश के अनुसार वृद्ध शब्द का अर्थ बुड्ढा होता है। [4]

ऑक्सफर्ड डिक्शनरी के अनुसार

ऑक्सफर्ड डिक्शनरी में वृद्ध शब्द का अर्थ दिया गया है ज्यादा समय तक जीवित रहने वाला, पुराना। [5]

विमर्श का शाब्दिक अर्थ होता है शविचार विनिमयश। इस अर्थ से वृद्ध विमर्श का अभिप्राय है वृद्धो के संबंध में विचार विनिमय। वृद्धो की परिस्थिती का आकलन कर उसे समझना, उससे संबंधित घटनाओ का चिंतन करना, वृद्ध के जीवन से जुड़े हुए महत्वपूर्ण पहलुओं की चर्चा, विचार विनिमय के माध्यम से वृद्ध के जीवन संघर्ष एवं अस्तित्व पर विचार करना और वृद्धो की समस्या को समझकर उसका समाधान प्रस्तुत करना ही वृद्ध विमर्श कहलाता है।

गिलिगडू चित्रा मुदगल का प्रसिद्ध उपन्यास है। इस उपन्यास के केंद्र में दो पात्र हैं–एक बाबू जसवंतसिंह जो रिटायर्ड इंजीनियर है और दूसरे कर्नल स्वामी जो मिलिट्री से रिटायर्ड कर्नल है। बाबू जसवंतसिंह ने कानपुर में घर बनाया है। उनका बेटा नरेंद्र दिल्ली में नौकरी करता है। उनको एक बेटी है जिसका नाम शलिनी है। बाबू जसवंतसिंह अपनी पत्नी के साथ कानपुर में अपना जीवन बिता रहे थे। उनके घर में सुनगुनियाँ चौका बर्तन का काम करती है और उनके घर के पीछे के गैरेज में रहती है। उनकी पत्नी पति के अनुकूल सब कुछ करती थी। अचानक उनकी पत्नी की मृत्यु होती है। जसवंतसिंह अपने बेटे के यहाँ नहीं जाना चाहते थे। पत्नी के बिना वे अकेलापन महसूस करते हैं। उनकी पत्नी ने उनके सब राग विराग झेले थे। उनके स्वभाव के अनुसार उसने अपने आपको ढाल लिया था। कुछ दिनों बाद उनके मित्र हरिहर की मृत्यु दिल का दौरा पड़ने से हो गई उस समय उनके साथ कोई नहीं था। इस घटना से जसवंतसिंह काफी आहत होते हैं और अपने बेटे नरेंद्र के पास जाने का निर्णय लेते हैं। यही से उनकी त्रासदी आरंभ हो जाती है। जब वे अपने बेटे के यहाँ जाते हैं तो उन्हें बाल्कनीवाला कमरा दिया जाता है। बहू सुनयना उन्हें छोटे–छोटे कारणों से डाँटती है। उन्हें समझकर लेने की बजाय उनको कटघरे में खड़ा कर दिया जाता है। पोते मलय और निलय को भी यही शिक्षा दी गई थी कि अपने से मतलब रखे वे कभी बाकी बच्चों के साथ न खेलते थे और न ही अपने खिलौनों को किसी को हाथ लगाने देते। सुबह की सैर में उनकी मुलाकात कर्नल स्वामी से होती है जो अत्यंत मजाकियाँ और हँसमुख स्वभाव के है। दोनों में गहरी मित्रता हो जाती है। कर्नल स्वामी उन्हें दिल्ली का दर्शन कराते हैं, फिल्म दिखाते हैं जो उनके बेटे नरेंद्र ने कभी नहीं किया। कर्नल स्वामी अपने नातियों को गिलीगडू कहते हैं जिनका नाम है

कुमुदिनी और कात्यायनी। मि. सिंह को सुनगुनियाँ की सोमवती–रामवती की याद आती है। मि. सिंह इससे पहले अपनी पत्नी के साथ दो–तीन दिनों के लिए ही आते थे। नरेंद्र की अम्मा बहू सुनयना का हाथ बँटाती थी इस कारण उसकी तारीफ होती थी। मि. सिंह की कोई उपयोगिता नहीं। बहू उनको घर का बचाखुचा फ्रिज में रखा खाना देती है। उन्हें हाजमे की परेशानी होने के बावजूद भी उन्हें खाना पड़ता है। जब वे अपने बेटे को इस बारे में बताते हैं तो वह उनको अपनी पसंद की गुंजाईश इस घर में न ढूँढने की सलाह देता है। तब वे समझते हैं इच्छा अनिच्छा घरवालों की होती है, घर में आकार रहनेवालों की नहीं। कर्नल स्वामी जीवन को सकारात्मकता से जीन चाहते हैं। मौत के बारे में वे कहते हैं, "मौत जब आएगी आ जाएगी किसी भी शक्ल में आ जाए मगर उन कुछ कष्टकर दिनों की कल्पना में रात–दिन अधमरे होकर जीना ज़िंदगी का मज़ाक उड़ाना नहीं। लीव लाइक शेर अपनी तरह से अपनी शर्तों पर।" [6]

प्रस्तुत उपन्यास गाँव से शहर आए बुजुर्ग व्यक्ति के अकेलेपन, पीड़ा का चित्रण करता है। कर्नल स्वामी और मि. सिंह दोनों अपने बेटों द्वारा उपेक्षित हैं। कर्नल स्वामी के बेटे उनकी संपत्ति के लिए झगड़ते हैं। वृद्ध अपने बच्चों को पढ़ाते हैं अपनी सारी कमाई उनपर खर्च करते हैं, परंतु वही बच्चे उनको अपने जीवन से बेदखल करते हैं। जब उनको बच्चों के सहारे की आवश्यकता होती है तब वे साथ नहीं देते, लेकिन उनकी संपत्ति पर हक जमाने का प्रयास करते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में विधवा एवं विधुर वृद्धों की समस्या के प्रति भी ध्यान केंद्रित किया है। अणिमादास अपने अंतिम पड़ाव में जीवनसाथी की जरूरत महसूस करअपने अकेलेपन को दूर करने के लिए समाचारपत्र में विज्ञापन तक देती है। अकेले वृद्ध के लिए जीना काफी मुश्किल होता है। बच्चे अपनी दुनिया में व्यस्त रहते हैं, पोतों की अपनी दुनिया होती है इन सबमें वृद्ध को निरुपयोगी मानकर बेदखल किया जाता है। उनकी इच्छा, अनिच्छा को नहीं देखा जाता है। जहाँ बुजुर्गों के लिए कोई स्थान नहीं है। जब मि. सिंह को कर्नल स्वामी के त्रासदी का पता चलता है तो वे काफी निराश होते हैं और उन्हें भी अपने भविष्य का अंदाजा आता है। नरेंद्र, उसकी पत्नी सुनयना तथा पोते निलय–मलय के द्वारा मिलने वाली उपेक्षा से वे पहले ही अस्वस्थ थे और कर्नल स्वामी के घर पहुँचकर वापिस कानपुर जाने का निर्णय लेते हैं। जहाँ वे अपनी मर्जी के अनुसार रह सके। वे अपनी सारी संपत्ति सुनगुनियाँ के नाम करवाने का निश्चय करते हैं। यहाँ तक की अपने अंतिम क्रियाकर्म का अधिकार वे सुनगुनियाँ के बेटे को देने का निर्णय करते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास वृद्धों के प्रति समाज एवं परिवार का उपेक्षित दृ ष्टिकोण परिलक्षित होता है। अपने साथी के गुजर जाने के बाद अकेला वृद्ध अनेक समस्याओं का सामना करता है। उसमें भी अगर वह पुरुष है तो अधिक समस्याएँ निर्माण होती है। वह परिवारवालों को निरुपयोगी लगता है। स्त्री वृद्ध अपने बहू की मदद की वजह से घर में उपयोगी साबित होती है। पुरुष वृद्ध जीवन में अपने तरीके से जिये होते हैं और जब पत्नी गुजर जाती है तो उनको अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बहू अपने ससुर के नखरे सह नहीं पाती उनको वह टोकती है तो उस वृद्ध को ठेंस पहुँचती है। उपन्यास के प्रमुख पात्र बाबू जसवंतसिंह की स्थिति इसी प्रकार होती है। पत्नी के गुजर जाने के बाद वे अकेले पड़ते हैं। कर्नल स्वामी की स्थिति भी कुछ इसी प्रकार की है। वे अणिमादास के माध्यम से पुनः एक बार साथी की तलाश करते हैं। यह उपन्यास आज की वास्तविकता को दर्शाता है। प्रस्तुत उपन्यास में मिस्टर और मिसेज श्रीवास्तव कर्नल स्वामी के पड़ोस में अकेले रह रहे हैं। उनकी अपनी कोई औलाद नहीं है, लेकिन कर्नल स्वामी की स्थिति देखकर उनको कोई मलाल नहीं है की उनकी अपनी कोई औलाद नहीं है। मिसेज श्रीवास्तव कहती हाँ, "ऐसी कसाई औलादों से आदमी निपूता भला। हमे इस बात का कोई गम नहीं कि हमारी कोई अपनी औलाद नहीं..।" [7] जो व्यक्ति जीवनभर काम करते हुये परिवार का पालन एवं नेतृत्व करता है वृद्ध हो जाने पर तथा सेवानिवृत होने के बाद परिवार के जो लोग उसपर आश्रित रहते थे वही उसको उपेक्षित जीवन देते हैं। आज के समय में एक पिता को अपने बेटे–बहू से डर लग रहा है। जिस कारण वह किसी भी आत्मीय को घर बुला नहीं सकता। बुढ़ापे में व्यक्ति अकेला असहाय और निर्बल होता है। उसकी कार्यक्षमता कम होती है। इस कारण उसे दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है यही निर्भरता उनकी समस्या का कारण बनती है। कर्नल स्वामी भरा–पूरा परिवार होने के बावजूद पत्नी के मृत्यु के बाद आठ वर्षों से अकेले हो गए थे, क्योंकि पत्नी के न रहने पर उनके साथ रहने वाला कोई नहीं था। जीवनसाथी की मृत्यु बुढ़ापे को और कष्टदायक बना देती है, क्योंकि जीवन का लंबा अरसा साथ में गुजारने के बाद जीवन के अंतिम समय में अतीत की यादे और सुख दुख साझा करनेवाले करीबी साथी का अभाव महसूस होता है। बुजुर्गों को युवा पीढ़ी से अपनेपन की चाहत होती है। यह अपनापन उन्हें घर में मिलता है तो उसकी खोज में दर–दर भटकना नहीं पड़ेगा। आज बाजार के साथ–साथ पारिवारिक रिश्तों की दुनिया में भी उपयोगितावादी सिद्धांत महत्वपूर्ण हो गया है। जब कोई वस्तु उपयोगी नहीं होती तो उसे फेंक दिया जाता है। यही स्थिति आज समाज में वृद्धों की भी है। बच्चे भी इस प्रवृत्ति से बच नहीं पाये हैं। बच्चे टी.वी., मोबाईल और इंटरनेट के माध्यम से अपना बचपन ढूँढ रहे हैं। जीवन के अंतिम पड़ाव में वृद्धों को परिवार की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। वृद्ध हमारे समाज की अमूल्य धरोहर है। हमारे समाज की जरूरत है। अगर वे नहीं होते तो हम होते ही नहीं यह बात हमें समझनी होगी तभी समाज का विकास संभव है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से कह सकते हैं कि चित्रा मुदगल ने भारतीय समाज में लंबे समय सेचली आ रही पूँजी और दाह संस्कार पर पुत्राधिकार की परंपरा को नकारा है। बाबू जसवंतसिंह और कर्नल स्वामी दोनों अपने उत्तराधिकारी के रूप में अपने सगे बेटों की अपेक्षा दूसरों को नियुक्त करते हैं। वर्तमान समय में उदारीकरण और भूमंडलीकरण के प्रभाव से व्यक्ति कि व्यस्तता बढ़ रही है। इस दौर में पुरानी पीढ़ी को नई पीढ़ी के साथ सामजस्य बैठाना होगा और नई पीढ़ी को भी पुरानी पीढ़ी की भावनाओं को समझना पड़ेगा तभी समाज की प्रगति होगी। बुजुर्गों को उपेक्षित और असहाय छोड़कर समाज का विकास संभव नहीं है। बुजुर्गों के अनुभव और ज्ञान का लाभ अगर नई पीढ़ी को होता है और नई पीढ़ी भी वृद्धों को बेकार न समझकर उसकी उपयोगिता को समझे तो निश्चित रूप से इस समस्या का समाधान होगा।

संदर्भ सूची

1. वाक नए विमर्श का त्रैमासिक वर्ष २००७ अंक ३, संपादक सुदेश पचोरी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
2. संस्कृत मराठी शब्दकोश – संपादक जनार्दन ओक, वरदा बुक्स, सेनापति बापट, मार्ग, पुणे, पृष्ठ क्रमांक ४५४
3. बृहत हिंदी कोश– संपादक कालिका प्रसाद, राज बल्लभ सहाय, मुकुंदी लाल श्रीवास्तव, ज्ञान मंडल लिमिटेड, वाराणसी, पृष्ठ क्रमांक १०८२
4. राजपाल हिंदी शब्दकोश डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एंड सन्स, दिल्ली, पृष्ठ क्रमांक ५७५६
5. ऑक्सफर्ड डिक्शनरी, पृष्ठ क्रमांक ४६६
6. चित्रा मुद्गल –गिलिगडु पृष्ठ क्रं 63
7. चित्रा मुद्गल –गिलिगडु पृष्ठ क्रं 138